रात्रि क्लास 1/11/68 ओमशांति शिवबाबा याद है?

बच्चे जानते हैं डावरी की सिस्टम चल रही है इसको कहेंगे परंपरा। 5000 वर्ष बाद इन ल॰ना॰ का राज्य होगा। कितनी डावरी(दहेज) मिलेगी। जितना जिसके पास धन है इतनी डावरी(दहेज) मिलती है। वहाँ तो दासियाँ आदि भी मिलती हैं। सतयुग किसको कहा जाता है यह भी कोई नहीं जानते हैं। समझते हैं यह स्वर्ग के मालिक हैं, तो भी यह पता नहीं है स्वर्ग कब था, कौन वहाँ रहते थे। तुम बच्चे कुछ भी नहीं जानते थे। यह फील करते हो। पढ़ाई में भी पूरा अटेन्शन देना चाहिए। एक तो है पढ़ाई की सबजेक्ट और याद की यात्रा। यही घड़ी-2 भूल जाते हैं। दादा से पूछ सकते हो आपके तो बाजु में बैठे हैं। यह कहते हैं जितना नज़दीक है उतना और ही मेरे लिए डिफीकल्ट है। बाप समझाते हैं कर्मातीत अवस्था होनी है याद की यात्रा से। अभी नहीं है। माया भी कम नहीं है। बहुत ही तूफान में लाती है। माया बिल्ली कहते हैं ना। जितना जो कम याद करते हैं उनको माया फथकावेगी। बॉकसिंग फर्स्ट क्लास भी होती है, थर्डक्लास भी होती है। यह भी ऐसे ही है। जो पुरुषार्थ करते हैं वह सर्विस में शो करते हैं। सा॰ की तो कोई बात ही नहीं। कहा ही जाता है योगबल। सा॰ बल नहीं कहा जाता। सभी आत्माओं का बाप एक है उनको याद करने से बल मिलेगा। हम आत्माओं का बाप है ना। भक्तिमार्ग में बिगर देखे भी याद करते रहते हो। कोई दुःख होता है तो भगवान को पीटते हैं। जालिम हो, ऐसा हो। बच्चे समझ गये बिल्कुल अंधियारा है। दुनिया में यह कोई भी यह बातें नहीं जानते हैं। कहा जाता है शुभ कार्य में देरी नहीं। मौत सिर पर खड़ा है। बाप को याद करने जैसा शुभ कार्य और कोई नहीं। बाबा घड़ी-2 कहते हैं अलफ माना अल्ला। बे है बादशाही। मुसलमान लोग खुदा की बन्दगी करते हैं; परंतु खुदा को जानते ही नहीं। यह भी भगवान भगवान कहते हैं। जानते भी हैं वह निराकार है ऊँच ते ऊँच। फिर गीता में कह देते हैं कृष्ण भगवानुवाच। कृष्ण को ऊँच ते ऊँच थोड़े ही कहेंगे। राधे-कृष्ण दोनों हैं जो फिर ल॰ना॰ गाये जाते हैं। अभी तुम बच्चों को अंत मिल गया है। कहते हैं ईश्वर बेअंत है। पहचान नहीं सकते हैं। जिस चीज़ का अंत नहीं पाया जाता वह चीज़ तो होती भी नहीं। जिसका अंत नहीं पाया जाता है गोया वह चीज़ है नहीं। बाप खुद आकर अपना अंत देते हैं। बाप कहते हैं तुम बच्चे ही अंत पाते हो, और कोई पा न सके। खुशी होती है बाप को भी जान लिया, सृष्टि के आदि-मध्य-अंत को भी जान लिया। बाप कहते हैं मैं राजयोग सिखलाता हूँ। शास्त्रों में फिर क्या-2 लिख दिया है। मेरा अंत कोई पा नहीं सकते। बेहद के बाप से तुमको बेहद का वर्सा मिलता है। बाप समझाते हैं अभी अजन इतना समझाने का बल नहीं है। बल मिलेगा कैसे? याद की यात्रा से। इसमें ही बहुत फेल होते हैं। पूरी कर्मातीत अवस्था हो जाये, आत्मा सतोप्रधान बन जाये, तो फिर शरीर भी पवित्र चाहिए। जितना-2 तुम पुरुषार्थ करते रहेंगे। तुम समझते हो बरोबर हम आत्मा हैं। हमारा बाप परमात्मा है। वह कहते हैं और संग बुद्धि का योग तोड़ मुझ एक साथ जोड़ो। यह ड्रामा की नूँध है।

कलकत्ते का कॉनफ्रेंस हुई। वह चाहते हैं विश्व में शांति कैसे हो। आठ रोज़ वहाँ थे; परंतु कोई बच्चा ऐसा न निकला जो ठीक समझा सके। बाप की महिमा बतानी चाहिए। शांति का सागर तो बाप ही है। विश्व में शांति स्थापन करना तो बाप का ही काम है। वह कहते हैं मुझे याद करो, तो तुम विश्व के मालिक बन जावेंगे। विश्व में शांति अब स्थापन हो रही है। दस मिनट में तो तुम बहुत बता सकते थे; परंतु ऐसा कोई निकला नहीं। बाबा कहेंगे योगबल नहीं है। देहअभिमान कारण कोई ताकत न रही। अपने देहअभिमान में ही रहे। बाबा कहते रहते हैं दिल्ली को घेराव करो, तो वह समझे यह कैसे विश्व में शांति स्थापन करते कर रहे हैं; परंतु (ब)ल नहीं है तो विजय नहीं पाते है। योगबल नहीं है तो कुछ कर नहीं सकते। विश्व में शांति लिए ही (माथा) मारते रहते हैं। भय तो सभी को है। मूँझे पड़े हैं। तुम जानते हो; परंतु योगबल की ताकत नहीं है। अहंकार ..ी रहता है। हम बहुतों को ज्ञान देते हैं; परंतु उनसे कुछ फायदा नहीं है। योग की ताकत चाहिए, नहीं

तो क्रिमिनल आई चल जाती है। यहाँ तो वह आई नहीं चाहिए। बाप कहते हैं ड्रामा प्लैन अनुसार अभी तो योगबल बहुत चाहिए। क्रिमिनल आई निकले तब भाई-2 समझें। देह का अहंकार टूट जाये। हम सभी भाई-2 हैं। हम बाप को याद कर कर्मातीत अवस्था को पाने पुरुषार्थ कर रहे हैं। हम जानते हैं हम भाई-2 समझ बाप को याद करेंगे तो अंत मते सो गति हो जावेगी। तुम जानते हो हम अपना राज्य स्थापन कर रहे हैं। अनेक बार स्थापन किया है। 84 का चक्र बाप ने बताया है। उसमें दैवीगुण भी धारण करनी है। चार्ट के साथ दैवीगुण भी चाहिए। सारे दिन में आसुरी खान-पान तो नहीं किया? पोतामेल देखना चाहिए; परंतु माया लिखने नहीं देती है। श्रीमत पर चलते ही नहीं। श्रीमत पर चलेंगे नहीं तो घाटा पड़ जावेगा। लिखना चाहिए। कुछ न कुछ भूलें होती हैं ज़रूर। कर्मातीत अवस्था का तो कोई बना नहीं है। कई तो सच बोलते ही नहीं। सच जैसे कि जानते ही नहीं। यह है ही झूठ खंड। सतयुग को कहा जाता है सच खण्ड। यहाँ है आसुरी राज्य। बाप समझाते हैं यह रावण तुम्हारा सबसे पुराना दुश्मन है। बच्चों को खुशी बहुत चाहिए। बाप समझाते हैं सतयुग में तुमको बहुत खुशी थी; सतोप्रधान थे। फिर सन्यासी कहते हैं सुख कागविष्ठा समान है। अपरंअपार दुःख है। वहाँ है अपरंअपार सुख; परंतु जब स्थायी याद रहे ना। अंदर में खुशी भी हो। अभी बाबा आया हुआ है। बाप आये हैं स्वर्ग का मालिक बनाने। वहाँ सुख ही सुख देंगे। तो इतना खुशी में हर्षितमुख रहना चाहिए। बाप समझाते हैं ...हम स्वर्ग की बादशाही देने आये हैं तो खुशी रहनी चाहिए ना। माया बिल्ली खुशी क्यों उड़ा देती है? माया विघ्न तब पड़ते हैं जब बाप की याद भूल जाते हैं। बाबा वही ज्ञान देते हैं तुम वही हो जो कल्प-2 वर्सा लेते हो। जितना पुरुषार्थ करेंगे उतना ही प्रारब्ध पावेंगे। पुरुषार्थ बिगर कोई रह नहीं सकता। भूख मरने का भी प्रश्न है ना। कैसे मर पड़ते हैं? यहाँ तो पुरुषार्थ करना है बाप को याद करने का। यह है हीरे जैसा जन्म। ओम।